यूरोप की लोक कथाऐं–1

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Europe Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of Europe-1)
Cover Page picture: Big Ben (London), Colosseum (Rome), Eiffel Tower (Paris)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Europe

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
यूरोप की लोक कथाऐं–1 5
1 सन्तोष का सेब 7
2 भिखारी और रोटी 19
3 दो भाई और एक सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा 29
4 रफू करने वाली सुई 31
5 गरुड़ों का वायदा 38
6 राजकुमारी और मटर का दाना 42
7 राजकुमार और सेब 45

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

यूरोप की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। साइज़ में यूरोप आस्ट्रेलिया से पहले आता है। जैसा कि यूरोप के बाहर दुनियॉ में लोगों का विश्वास है सारे यूरोप में अंग्रेजी नहीं बोली जाती। वहॉ भी बहुत सारी भाषाऐं बोली जाती हैं। पर यूरोप की बहुत सारी लोक कथाऐं अंग्रेजी भाषा में भी मिल जाती हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में काफी मिलता है और इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की केवल कुछ लोक कथाऐं ही हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है। दूसरे क्योंकि इस महाद्वीप की लोक कथाओं के बिना दुनियॉ का लोक कथा साहित्य कुछ अधूरा सा लगता है इसलिये भी इनमें से कुछ लोक कथाओं को इस प्रोजैक्ट में शामिल कर लिया गया है।

इस महाद्वीप में कुल मिला कर **50** से ज़्यादा देश है पर इतने सारे देशों में से केवल कुछ ही देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं जैसे इंगलैंड, नौर्स देशों के पॉच देश[1], जर्मनी, इटली आयरलैंड आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं। शेष देशों की लोक कथाऐं "यूरोप की लोक कथाऐं" नाम की पुस्तक के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं।

इस महाद्वीप में सिन्डरैला की कहानी बहुत मशहूर है और वह इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही सुनी जाती है। सिन्डरैला के अलावा यहॉ कुछ और भी कथाऐं ऐसी हैं जो इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही जाती है। वे सब कथाऐं भी उनके अपने नाम से ही प्रकाशित की गयी हैं। इस महाद्वीप की सबसे ज़्यादा कथाऐं ग्रिम्स और ऐन्ड्रू लैंग की कथाओं के संग्रहों में मिलती हैं। कुछ अनुवादकों ने इटली देश की लोक कथाओं पर भी ध्यान दिया है। दूसरे देशों की लोक कथाऐं कम मिलती हैं और कुछ देशों की लोक कथाऐं तो मिलती ही नहीं हैं।

हालॉकि इस महाद्वीप से लोक कथाऐं हज़ारों में लिखी जा सकती हैं पर इस समय हमने यहॉ की केवल इंगलैंड, जर्मनी, आयरलैंड, जियोर्जिया और इटली की लोक कथाओं पर ख़ास ध्यान दिया है। इनकी कथाऐं हमने इन देशों के नाम से ही प्रकाशित की हैं। "यूरोप की लोक कथाऐं–**1**" पुस्तक में हम यूरोप की केवल वे लोक कथाऐं ही प्रकाशित कर रहे हैं जिनकी लोक कथाओं के देशों के नामों का पता नहीं है। "यूरोप की लोक कथाऐं–**2**" में हम यूरोप के उन देशों की लोक कथाऐं प्रकाशित करेंगे जिनकी लोक कथाऐं इतनी कम हैं कि उनके लिये अलग से पुस्तक नहीं बनायी जा सकती।

आशा है कि ये लोक कथाऍ तुम लागों को पसन्द आयेंगी और यूरोप की वे लोक कथाऐं जो अंग्रज़ी में होने की वजह से या फिर उनके भारत में उपलब्ध न होने की वजह से तुम लोग नहीं पढ़ सकते वे सब अब तुम हिन्दी में पढ़ सकोगे।

सो प्रस्तुत है तुम सबके हाथों में यह पुस्तक "यूरोप की लोक कथाऐं–**1**"।

---

[1] Norse or Nordic or Scandinavian countries are five – Iceland, Denmark, Finland, Norway and Sweden

संसार के सात महाद्वीप

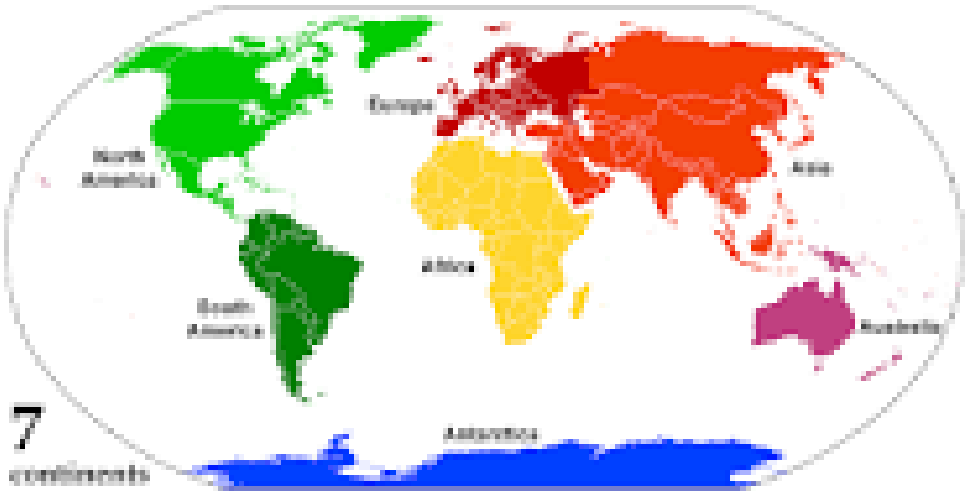

There are two distinctive geographical regions in Europe
--The first one is United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland (4 countries) – United Kingdom, Great Britain or Britain is an island on which there are three countries – England, Scotland, Wales. Later Northern Ireland joined them, so now the “United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland” includes the Northern part of Ireland too.
-- The other one is Norse, or Nordic or Scandinavian countries (5 countries). There are five countries in Nordic Countries – Iceland, Denmark, Finland, Norway and Sweden

1 सन्तोष का सेब[2]

एक बार की बात है कि यूरोप में एक स्त्री रहती थी। उसके तीन बेटियॉ थीं। उसकी पहली बेटी की दोनों ऑखों में भेंगापन था फिर भी उसकी मॉ उसे बहुत प्यार करती थी क्योंकि उसकी अपनी दोनों ऑखें भी भेंगी थीं।

उसकी दूसरी बेटी का एक कन्धा ऊॅचा और एक कन्धा नीचा था और भौहों के बाल धुॅए की कालिख जैसे काले थे फिर भी उसकी मॉ उसको उतना ही प्यार करती थी जितना कि वह अपनी पहली बेटी को करती थी क्योंकि उसका अपना भी एक कन्धा ऊॅचा और एक कन्धा नीचा था और भौहों के बाल धुॅए की कालिख जैसे काले थे।

पर उसकी सबसे छोटी बेटी पके सेब की तरह सुन्दर थी। उसके रेशम से मुलायम बाल सोने के रंग जैसे थे परन्तु उसकी मॉ उसे बिल्कुल भी नहीं चाहती थी क्योंकि न तो वह खुद ही बिल्कुल सुन्दर थी और न ही उसके अपने बाल ही सुनहरे थे।

उस स्त्री की दोनों बड़ी बेटियॉ रोज सुबह शाम बहुत बढ़िया कपड़े पहनती थीं और सारा दिन बाहर धूप में बैठी रहती थीं। जब

[2] Apple of Contentment – a folktale from Europe

कि क्रिस्टीन[3], उसकी सबसे छोटी वाली लड़की, बहुत ही घटिया कपड़े पहनती थी।

इसके अलावा वह घर में काम भी बहुत करती थी। वह बतखों को रोज सुबह पहाड़ी तक ले जाती थी ताकि वह हरी हरी घास खा कर मोटी हो जायें और फिर शाम को उनको घर वापस लाती थी।

दोनों बड़ी बहिनों को सफेद रोटी और मक्खन खाने को मिलता था और बढ़िया दूध पीने को मिलता था मगर क्रिस्टीन को सूखी डबल रोटी के टुकड़े ही खाने को मिलते थे।

एक बार क्रिस्टीन अपनी बतखें ले कर पहाड़ी की ओर चली जा रही थी। उसके हाथों में उसकी बुनाई थी। वह धूल भरे रास्ते पर कूदती फॉदती चलती जा रही थी कि एक पुल के पास आयी जो एक नाले पर बना हुआ था।

वहॉ उसने एक लाल रंग की टोपी देखी जो एक पेड़ की डाल से झूल रही थी। उसके ऊपर चॉदी की एक घंटी भी लगी थी।

वह टोपी क्रिस्टीन को बहुत अच्छी लगी। वह सोचने लगी कि वह उसको ले ले क्योंकि ऐसी टोपी उसने पहले कभी नहीं देखी थी। सो उसने वह टोपी उतार कर अपनी जेब में रख ली और बतखों के साथ आगे बढ़ चली कि उसने एक आवाज सुनी — "क्रिस्टीन, क्रिस्टीन।"

[3] Christine – name of the youngest daughter

उसने इधर उधर देखा तो उसे एक अजीब सा काला आदमी दिखायी दिया। उसका सिर तो बन्द गोभी जितना बड़ा था और टॉगें नन्हीं मूली जैसी थीं।

क्रिस्टीन ने उससे पूछा "तुम्हें क्या चाहिये।" वह आदमी अब तक उसके पास तक आ गया था और अपनी टोपी वापस मॉग रहा था क्योंकि उस टोपी के बिना वह पहाड़ी पर अपने घर वापस नहीं जा सकता था।

वह आदमी वहीं रहता था मगर फिर उसकी यह टोपी यहॉ पेड़ पर कैसे लटकी रह गयी यह उसकी समझ में नहीं आया। क्रिस्टीन ने सोचा कि टोपी उसको वापस देने से पहले उस आदमी का नाम तो उसे उस आदमी से मालूम कर ही लेना चाहिये।

असल में वह आदमी वहॉ उस नाले में मछलियॉ पकड़ रहा था कि हवा से उसकी टोपी नाले में गिर गयी थी और उसने उसे पेड़ पर सूखने के लिये डाल दिया था। अब क्या क्रिस्टीन वह टोपी उसे दे देगी?

उस आदमी ने उसे सब कुछ सच सच बता दिया कि कैसे उसकी टोपी वहॉ पेड़ पर पहुॅची।

क्रिस्टीन सोचने लगी कि वह क्या करे? टोपी दे या न दे? वह बहुत सुन्दर टोपी थी। अगर वह उसको टोपी दे देती है तो वह उसे टोपी के बदले में क्या देगा।

वह आदमी उसको उस टोपी के पॉच रुपये देने को तैयार था पर पॉच रुपये तो इतनी सुन्दर टोपी के लिये बहुत कम थे, और फिर उसमें चॉदी की घंटी भी तो लगी थी।

पर लो, वह आदमी तो उस टोपी के 100 रुपये भी देने को तैयार हो गया। नहीं नहीं, उसको पैसों की क्या परवाह पर इतनी सुन्दर टोपी आयेगी कहॉ से। उसको तो उसकी टोपी अच्छी लग रही थी।

आदमी बोला — "देखो किस्टीन, मैं इस टोपी के बदले में तुम को यह देने के लिये तैयार हूॅ।" कह कर उसने अपना खुला हुआ हाथ उसे दिखाया जिसमें बीन के एक दाने जैसा कुछ था। वह कोयले जैसा काला था।

"यह तो ठीक है पर यह है क्या?"

वह काला आदमी बोला — "यह "सन्तोष के सेब" का बीज है। इसे तुम अपने घर के पास बो देना। इसमें से एक पेड़ निकलेगा और उस पेड़ में लगेगा केवल एक सेब। जो भी उस सेब को देखेगा वही उसको देख कर उसको खाने के लिये ललचायेगा पर उस सेब को तुम्हारे सिवा कोई और नहीं तोड़ पायेगा।

जब तुम्हें भूख प्यास लगेगी तब यह मॉस और पानी बन जायेगा और जब तुम्हें ठंड लगेगी तो यह गरम कपड़े बन जायेगा।

दूसरी अजीब बात इसके बारे में यह है कि जैसे ही तुम यह सेब तोड़ोगी उसी समय उस सेब की जगह दूसरा सेब उग आयेगा और इस तरह उस पेड़ पर हमेशा एक सेब रहेगा। क्या अब तुम मेरी टोपी दे दोगी?"

क्रिस्टीन उस जादू वाले बीज को देख कर बहुत खुश हुई। उसने उस आदमी को उसकी टोपी वापस कर दी और उससे सेब का बीज ले लिया। उस आदमी ने अपनी टोपी अपने सिर पर रखी और गायब हो गया — ऐसे जैसे फूँक से मोमबत्ती बुझ जाये।

क्रिस्टीन उस बीज को ले कर घर पहुँची और अपने कमरे की खिड़की के सामने उसको बो दिया। सुबह उठी तो उसने खिड़की से झाँका तो वहाँ तो सेब का एक बड़ा पेड़ खड़ा था और उस पर एक सेब लटक रहा था। सेब का रंग बिल्कुल सुनहरा था।

वह बाहर गयी और आसानी से उसे तोड़ लिया। जैसे ही उसने उसे वहाँ से तोड़ा तुरन्त ही उसकी जगह एक और सेब वहाँ पर आ गया।

भूखे होने की वजह से वह सेब उसने तुरन्त ही खा लिया। खाने पर उसको लगा कि इतनी अच्छा सेब तो उसने पहले कभी खाया ही नहीं था क्योंकि उस सेब का स्वाद सेब जैसा नहीं था बल्कि शहद और दूध से बने केक जैसा था।

कुछ देर बाद उसकी सबसे बड़ी बहिन बाहर आयी और चारों तरफ देखने लगी। उसने वहॉ एक सेब का पेड़ देखा और उस पेड़ पर लटकता हुआ एक सुनहरा सेब देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। यह सेब का पेड़ रातों रात यहॉ कहॉ से आ गया?

उस पेड़ पर लगे सेब को देख कर उसकी उसी समय उस सेब को खाने की इच्छा हुई। उसे लगा मानो यही इच्छा उसके जीवन की पहली और आखिरी इच्छा थी। उसने सोचा इसे मैं ही तोड़ लेती हूॅ इसको तोड़ने में क्या है।" पर इसे कहना आसान था बजाय करने के।

जैसे ही उसने सेब तोडने के लिये पेड़ पर चढ़ना शुरू किया तो उसे लगा कि वह सेब तोड़ने नहीं बल्कि चॉद पकड़ने जा रही है। वह चढ़ती गयी, और चढ़ती गयी और चढ़ती गयी।

चढ़ते चढ़ते उसे लगा कि वह चॉद भी नहीं बल्कि सूरज को पकड़ने जा रही है। दोनों ही काम आसान थे पर सेब उससे अभी भी बहुत दूर था। आखिर उसने हिम्मत छोड़ दी।

फिर उसकी दूसरी बहिन आयी और उसकी भी उस सुनहरे सेब पर नजर पड़ी तो उसकी भी उसको लेने की इच्छा होने लगी पर चाहने और पाने में तो बहुत अन्तर है सो उसको भी वह सेब नहीं मिल पाया।

अन्त में उसकी मॉ आयी। उसने भी वह सेब लेना चाहा पर वह भी सेब नहीं ले पायी।

तीनों ही उस पेड़ के नीचे खड़ी उस सेब की इच्छा कर रही थीं पर तोड़ उसे कोई भी नहीं पा रहा था। मगर क्रिस्टीन जब भी चाहती वह सेब तोड़ लेती।

जब उसे भूख लगती, पेड़ का सेब उसकी भूख शान्त कर देता। जब कभी उसे प्यास लगती तो भी उसके लिये वहॉ सेब हाजिर था। जब उसे किसी अच्छे कपड़े पहनने की इच्छा होती तो वह भी उसको उस सेब से मिल जाता। अब वह दुनियॉ की सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत लड़की थी।

एक दिन एक राजा उधर से अपने आदमियों के साथ गुजर रहा था कि उसने भी उस पेड़ से लटका हुआ वह सुनहरा सेब देखा। उसको देखते ही उसके मन में भी उस सेब को खाने की इच्छा जाग उठी। उसने अपने एक नौकर को बुलाया और कहा कि वह उस सेब को कुछ सोने के सिक्कों के बदले में खरीद लाये।

नौकर उस घर की ओर गया और उस घर का दरवाजा खटखटाया। मॉ ने दरवाजा खोला और पूछा — "क्या बात है? तुम्हें क्या चाहिये?"

नौकर बोला — "कोई खास चीज़ तो नहीं, बाहर एक राजा हैं वह यह जानना चाहते हैं कि उनको यह सेब इतने सोने के बदले में मिल सकता है या नहीं।"

मॉ बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

नौकर ने उसको वह सोना दे दिया और वह सेब तोड़ने चल दिया। वह चढ़ा और चढ़ कर उसने डाल हिलायी मगर कोई फायदा नहीं हुआ। वह पेड़ पर भी चढ़ा पर फिर भी वह वहॉ तक नहीं पहुँच सका और वह वह सेब नहीं तोड़ सका।

नौकर राजा के पास वापस गया और बोला — "उस स्त्री ने वह सेब मुझे बेच तो दिया है मगर वह तो तारों से भी दूर लगता है। हाथ में ही नहीं आता।"

राजा ने एक और आदमी भेजा। वह आदमी मजबूत और लम्बा था मगर काफी कोशिशों के बाद वह भी उस सेब को नहीं तोड़ पाया। सो वह भी राजा के पास खाली हाथ वापस लौट आया। अब राजा खुद गया पर उसको भी वह सेब नहीं मिला और वह भी उसकी सुगन्ध मन में बसाये वापस चला गया।

घर आने के बाद भी राजा के मन से उस सेब को खाने की इच्छा नहीं निकली। वह उसी की बात करता, उसी के सपने देखता। जितना वह उससे दूर होता जाता उतनी ही उसकी उसको पाने की इच्छा बढ़ती जाती।

आखिर वह उदास रहने लगा और एक दिन बीमार पड़ गया।

फिर एक दिन उसने एक अक्लमन्द आदमी को बुलाया और उससे वह सेब लाने के लिये कहा। उसने राजा को आ कर बताया कि जिस स्त्री ने आपके नौकर को वह सेब बेचा था उस सेब को उस

स्त्री की केवल एक लड़की ही तोड़ सकती थी क्योंकि वह उसी लड़की का पेड़ था।

यह सुन कर राजा अपने आदमियों के साथ वहॉ गया और किस्टीन के घर पहुँचा। वहॉ उसे केवल उसकी मॉ और दोनों बड़ी बहिनें ही मिलीं क्योंकि किस्टीन तो बतखें ले कर पहाड़ी पर गयी हुई थी।

राजा ने अपना टोप उतार कर झुक कर उनकी मॉ को नमस्कार किया। उस अक्लमन्द आदमी ने किस्टीन की मॉ से पूछा — "वह आपकी कौन सी लड़की है जिसका यह पेड़ है?"

राजा ने सोच रखा था कि अगर वह उस स्त्री की सबसे बड़ी वाली लड़की हुई तो सेब लेने के बाद वह उसे घर ले जायेगा और उससे शादी कर लेगा और अपनी रानी बना लेगा। इस काम में वह देर नहीं करेगा।

स्त्री बोली — "लेकिन क्या वह लड़की आपके और आपके सभी आदमियों के सामने उस पेड़ पर चढ़ेगी? नहीं नहीं, आप ऐसा कीजिये कि अभी तो आप अपने घर जाइये और वह लड़की सेब आपको बाद में आ कर दे जायेगी।"

राजा बोला — "ठीक है, मगर सेब ज़रा जल्दी भिजवाना।"

जैसे ही राजा गया वैसे ही उसने किस्टीन को बुलाया और कहा — "राजा ने यह सेब मॅगवाया है। तुम यह सेब तोड़ कर अपनी बड़ी बहिन को दे दो वह यह सेब ले कर राजा के पास चली

जायेगी। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं तुम्हें कुँए में फेंक दूँगी।"

क्रिस्टीन ने वह फल तोड़ कर अपनी बड़ी बहिन को दे दिया। उसकी बहिन ने उस सेब को एक रूमाल में लपेटा और उसको ले कर राजा के पास चल दी। वह बहुत खुश थी।

खट, खट, खट। वह दरवाजे पर सेब लिये खड़ी थी। उसको तुरन्त ही अन्दर बुला लिया गया। जैसे ही वह राजा के सामने आयी और उसने सेब देखने के लिये अपना रूमाल खोला तो मानो या न मानो उसमें सेब तो नहीं था बल्कि उसमें सेब की जगह एक गोल पत्थर रखा हुआ था।

जब राजा ने देखा कि वह उसके लिये सेब नहीं पत्थर ले कर आयी है तो उसको बहुत गुस्सा आया और उसने उसे घर से बाहर निकाल दिया।

राजा ने फिर अपना एक आदमी भेजा। उसने जा कर उन लड़कियों की माँ से पूछा — "क्या तुम्हारी कोई और लड़की भी है?"

"हाँ है। तुम घर चलो वह अभी तुम्हारे लिये सेब तोड़ कर लाती है।"

नौकर के जाने के बाद उसने फिर क्रिस्टीन को बुलाया और अपनी दूसरी बहिन के लिये सेब तोड़ने के लिये कहा।

क्रिस्टीन ने फिर एक सेब तोड़ा और अपनी दूसरी बहिन को दे दिया। वह भी जब राजा के पास पहुँची और उसको सेब देने के लिये अपना रूमाल खोला तो उसमें बजाय सेब के एक मुट्ठी कीचड़ निकली। राजा ने उसको भी अपने महल से भगा दिया।

नौकर फिर उनके घर आया और उनकी माँ से पूछा — "क्या तुम्हारे और भी कोई लड़की है?"

"हाँ है तो, मगर वह तो किसी काम की नहीं है। उसको तो केवल बतखों को पालने का काम आता है।"

"कोई बात नहीं। पर कहाँ है वह?"

"वह तो बतखों को ले कर पहाड़ी पर गयी है।"

उस लड़की को बुलाया गया। कुछ देर बाद वह आयी तो नौकर ने उससे पूछा — "क्या तुम राजा के लिये एक सेब तोड़ सकती हो?"

वह गयी और जंगली बेर की तरह वह सेब तोड़ कर ले आयी। नौकर ने अपना टोप उतार कर उसे झुक कर नमस्कार किया क्योंकि यही वह लड़की थी जिसको वे ढूँढ रहे थे।

उस नौकर ने उस लड़की को राजा के महल को चलने के लिये कहा। क्रिस्टीन ने वह सेब जेब में रख लिया और राजा के नौकर के साथ चल दी। और वह नौकर उसको ले कर राजा के महल की तरफ चल दिया।

राजा के घर में उस फटे हाल लड़की को देख कर सभी अपनी अपनी हथेलियॉ मुँह पर रख कर हँसने लगे। राजा ने पूछा — "क्या तुम सेब लायी हो?"

"जी हॉ।" किस्टीन ने अपनी जेब से सेब से निकाला और राजा की ओर बढ़ा दिया।

राजा ने उसको थोड़ा सा खाया और उसको लगा कि उसने ऐसा सेब पहले कभी नहीं खाया था। इसके अलावा उसने किस्टीन जैसी सुन्दर लड़की भी पहले कभी नहीं देखी थी।

ऐसा इसलिये था क्योंकि उसने सन्तोष का सेब खाया था।

राजा और किस्टीन की शादी हो गयी। उसकी मॉ और बहिनें भी वहॉ आयीं थीं। उन्होंने सोचा कि उनके पास तो उस सेब का पेड़ है पर उनका यह सोचना गलत था क्योंकि अगले दिन तो वह पेड़ किस्टीन के महल की खिड़की के सामने खड़ा था।

2 भिखारी और रोटी[4]

एक बार यूरोप में बहुत ज़ोर से बरफ पड़ रही थी और बहुत तेज़ ठंडी हवाऐं चल रही थीं। ऐसे मौसम में एक बूढ़ा आदमी एक गॉव में आया।

उसके शरीर पर पूरे कपड़े भी नहीं थे और वह ठंड से थर थर कॉप रहा था। वह हर घर के दरवाजे पर जा कर यह आवाज लगा रहा था — "कोई मेहरबान है जो इस भूखे और सरदी से ठिठुरते भिखारी को कुछ खाने को दे दे?"

पर सभी दरवाजे बन्द थे, सभी खिड़कियॉ बन्द थीं, कोई भी उस बूढ़े की पुकार नहीं सुन रहा था।

चलते चलते अन्त में वह एक बहुत बड़े घर के सामने रुक गया और उस घर का दरवाजा खटखटा कर आवाज लगायी — "मेरे ऊपर दया करो, मैं ठंड से सिकुड़ रहा हूॅ और बहुत भूखा हूॅ।"

दरवाजा खुला और उसमें से एक स्त्री ने झॉका। वह स्त्री खूब गरम कपड़े पहने हुए थी। उसका रंग गुलाबी था तथा वह किसी बड़े घर की दिखायी देती थी। पर उसकी शक्ल से लगता था कि वह अच्छे स्वभाव की नहीं थी।

[4] The Beggar and Bread – a folktale from Europe

वह उस बूढ़े को झिड़कती हुई सी बोली — "तुम्हें क्या चाहिये? मुझे बहुत काम है।"

बूढ़े ने कहा — "मेरे ऊपर दया करो, मैं बहुत भूखा हूँ। मुझे रोटी की खुशबू आयी तो मैं इधर चला आया।"

स्त्री ने फिर बुरा सा मुँह बनाते हुए कहा — "तो क्या वह रोटी मैं तुम्हारे लिये बना रही हूँ? वे रोटियाँ तो केवल मेरे अपने घर के लिये ही काफी हैं इसलिये मैं वे तुम्हें नहीं दे सकती।" और वह दरवाजा बन्द करके वहाँ से अन्दर चली गयी।

बूढ़ा कुछ पल तो वहाँ खड़ा रहा और फिर वह वहाँ से यह कहता हुआ चला गया — "मैं इस घर को याद रखूँगा।"

फिर वह यह कहता रास्ते पर चलने लगा — "कोई दयालु मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे को खाना दे, मैं सरदी से ठिठुर रहा हूँ।" पर ठंड बहुत थी इसलिये सभी घरों के दरवाजे बन्द थे, सभी खिड़कियाँ बन्द थीं।

आखिर उसने एक झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला और उसमें से एक स्त्री ने बाहर देखा। उसने फटे कपड़े पहने हुए थे और उसके पैर भी नंगे थे। लेकिन वह स्त्री बहुत दयालु लग रही थी।

जैसे ही उसने एक बूढ़े आदमी को ठंड से सिकुड़ते हुए देखा तो बोली — "अरे, तुम इस समय बाहर कैसे? आओ आओ, अन्दर

घर में आ जाओ और रसोई में बैठ कर थोड़े गरम हो लो। बाहर तो बहुत ठंडा है।"

उसने उस अजनबी का हाथ पकड़ा और सहारा दे कर उसे रसोईघर में ले गयी। वहीं उसके तीन बच्चे रात का खाना खाने के लिये मेज पर बैठे हुए थे।

उसने बच्चों से कहा — "बच्चो, अजनबी को बैठने के लिये एक कुरसी दो।" उसके तीनों बच्चे तुरन्त उठे और एक कुरसी ला कर आग के पास रख दी।

वह बूढ़ा आदमी उस कुरसी पर बैठ गया और अपने हाथ पॉव गरम करने लगा। फिर बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ। मुझे रोटी की खुशबू आई तो मैं इधर चला आया।"

स्त्री ने एक लम्बी सॉस ले कर कहा — "अफसोस, मेरे पास यही एक रोटी है। अगर यह रोटी खत्म हो गयी तो हमारे घर में और कुछ खाने को नहीं है।"

बूढ़े आदमी ने फिर कहा — "मैं बहुत भूखा हूँ। मैंने कल रात भी खाना नहीं खाया और न सुबह नाश्ता किया।"

वह स्त्री ज़ोर से अपने बच्चों से बोली — "बच्चों, तुम लोग सुन रहे हो। यह बूढ़ा हमसे भी ज़्यादा भूखा है। हम लोगों ने कम से कम एक रोटी का एक टुकड़ा सुबहे नाश्ते में तो खाया था परन्तु इस बेचारे ने तो कल रात से कुछ भी नहीं खाया। क्या मैं इसको यह रोटी दे दूँ?"

मॉ की यह बात सुन कर बच्चों की ऑखों में ऑसू आ गये क्योंकि उन्होंने नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया था और इस रोटी को इस अजनबी को देने बाद तो फिर उनके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं बचेगा।

परन्तु तीनों बच्चों ने एक साथ कहा — "मॉ, यह रोटी तो इनको मिलनी ही चाहिये क्योंकि ये हमसे ज़्यादा भूखे हैं।"

मॉ ने वह रोटी एक तश्तरी में रखी और अजनबी के सामने रख दी। अजनबी बहुत भूखा था सो उसने वह रोटी तुरन्त ही खा ली। फिर उसने अपना फटा कोट अपने शरीर के चारों ओर कस कर लपेटा और बोला — "मैं इस घर को याद रखूँगा। आपने मेरी इस बुरे समय में बहुत सहायता की है मैं किस प्रकार आपकी सहायता करूँ?"

उस स्त्री ने जवाब दिया — "मेरे लिये आप भगवान से प्रार्थना करें कि मुझे कल कहीं काम मिल जाये क्योंकि जब तक मुझे कहीं काम नहीं मिलेगा मेरे बच्चों को रोटी नहीं मिलेगी।"

उस बूढ़े ने कहा — "मैं अभी आपके लिये प्रार्थना करता हूँ कि आप कल सुबह जो भी काम शुरू करेंगी वह सारे दिन चलता रहेगा।" इतना कह कर वह बूढ़ा उठा और दरवाजा खोल कर बाहर चला गया।

अगली सुबह तीनों बच्चे जल्दी उठ गये और खाने के लिये कुछ मॉगने लगे। उस स्त्री ने एक आह भरी और बोली — "मेरे

प्यारे बच्चों, तुम्हें मालूम है कि घर में जो कुछ भी था वह सब कल रात मैंने उस अजनबी को दे दिया था अब तो घर में कुछ भी नहीं है।

पर हॉ, मेरी टोकरी में एक लाल रंग का कपड़ा पड़ा है। तुम वह ले आओ। उसे बेच कर मैं कुछ खाना खरीद कर लाती हूँ।"

तीनों बच्चे एक साथ बोले — "पर वह तो आपके नये कोट का कपड़ा है मॉ और आपके लिये इस ठंड में कोट बहुत जरूरी है।"

मॉ बोली — "कोई बात नहीं बच्चों, तुम चिन्ता न करो। अभी तो तुम लोग नापने के लिये गज ले आओ ताकि यह पता चल सके कि वह है कितना।"

एक बच्चा उठा और कपड़ा और गज दोनों ले आया और उस स्त्री ने उस कपड़े को नापना शुरू किया।

"एक गज, दो गज, तीन गज, चार गज, यह क्या? यह कपड़ा तो खत्म होने पर ही नहीं आ रहा और मुझे अच्छी तरह याद है कि यह कपड़ा तीन गज से ज़्यादा नहीं था। अभी कितना और है?

पॉच, छह, सात, आठ गज। यह क्या हो रहा है? नौ, दस, ग्यारह, बारह गज। हे भगवान, हम पर दया करो, यह कपड़ा तो खत्म ही नहीं हो रहा। तेरह गज, चौदह गज...।"

ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कपड़ा अनगिनत गज लम्बा हो गया हो और खत्म होने पर ही न आ रहा हो। उसने सुबह यह काम शुरू किया था और दोपहर तक उसका वह छोटा सा कमरा उस लाल कपड़े के ढेर से भर गया।

बच्चे खुशी से बाहर भागे और पड़ोसियों को खबर दी। पड़ोसी भी इस जादू को देखने आये और कपड़े के ढेर को देख कर आश्चर्य से बोले — "अरे तुम्हें इतना कपड़ा कहॉ से मिला?"

स्त्री ने कोई जवाब नहीं दिया और उसके हाथ कपड़ा नापते रहे और नापते रहे। और यह काम सूरज डूबने तक चलता रहा और चलता रहा। उस समय तक उसकी छोटी सी झोंपड़ी उस खूबसूरत लाल कपड़े से भरी पड़ी थी।

अब वे लोग गरीब नहीं रहे। उस लाल कपड़े को बेच कर उन्होंने बहुत धन कमाया।

ऐसी बातें छिपी नहीं रहतीं। यह खबर उस बुरे स्वभाव वाली स्त्री के पास भी पहुॅची जिसने उस बूढ़े को उस रात दुतकार कर भगा दिया था।

उसने सोचा — "ओह, लगता है वह बूढ़ा आदमी कोई जादूगर था। अगर मैं उसे उस दिन न भगा देती तो वह मुझ से भी यही कहता कि कल सुबह तुम जो काम भी शुरू करोगी वह सारा दिन चलता रहेगा।

अगर अबकी बार वह इधर आया तो मैं उसे जितनी रोटी की जरूरत होगी उतनी दे दूँगी और फिर मैं देखती हूँ कि गॉव में सबसे अमीर कौन होता है।"

अब उसके दरवाजे और खिड़कियॉ हमेशा खुली रहतीं और वह भी सड़क पर हर आने जाने वाले पर नजर रखती। ठंड अभी भी बहुत थी पर धन के लोभ में वह अब अपने घर के दरवाजे खिड़कियॉ बन्द ही नहीं करती थी।

आखिरकार एक शाम उसको उस बूढ़े की आवाज सुनायी दी — "कोई दयालु है जो मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे और सरदी से ठिठुरते भिखारी को खाना दे।"

वह स्त्री तो इस ताक में ही बैठी थी कि कब वह भिखारी आये और कब वह उसको खाना खिलाये।

सो जैसे ही उसने उस भिखारी की आवाज सुनी उसने तुरन्त ही उसको बुलाया और कहा — "आओ आओ, अन्दर आ जाओ। इसे अपना ही घर समझो। यह लो इस कुरसी पर बैठो और एक प्याला चाय पी कर थोड़ा गरम हो लो। बोलो मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकती हूँ?"

वह बूढ़ा कुरसी पर बैठ गया और चाय पीता हुआ बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ रोटी की खुशबू आयी तो इधर चला आया।"

"अरे तुम भूखे हो? यह लो रोटी, सब्जी, दाल, चटनी आदि और जितना चाहे उतना खाओ। चाहे मैं भूखी रह जाऊँ परन्तु मैं तुम्हें रोटी जरूर खिलाऊँगी।"

उस रात बूढ़े ने बहुत अच्छा खाना खाया। खाना खा कर वह बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। मैं इस घर को याद रखूँगा।"

स्त्री ने उत्सुकता से कहा — "और क्या?"

बूढ़ा मुस्कुरा कर बोला — "मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जो भी काम तुम कल सुबह शुरू करो वह सारा दिन चले।" यह कह कर वह बूढ़ा चला गया।

जब वह बूढ़ा चला गया तो वह स्त्री खुशी से चीख पड़ी — "ओह, अब मैं क्या करूँ? हाँ, मैं कल सुबह से पैसे गिनना शुरू करती हूँ ताकि मेरा वह काम शाम तक चलता रहे।

पर मैं इतने सारे पैसे रखूँगी कहाँ? मुझे उनको रखने के लिये पहले से ही कुछ थैले बना लेने चाहिये। मैं कुछ कपड़ा काट लूँ, रात भर में मैं उस कपड़े से कुछ थैले सिल लूँगी, और सुबह तक वे मेरे पैसे रखने के लिये तैयार हो जायेंगे।"

उसने एक कैंची ली और कुछ कपड़ा पास में रख लिया और थैले बनाने लगी। वह रात भर इसी काम में लगी रही। पहले वह थैले का कपड़ा काटती और फिर उसको सिलती। यह सब करते करते कब सुबह हो गयी उसको पता ही नहीं चला।

एकाएक उसको लगा कि उसकी कैंची तो रुक ही नहीं रही थी। वह उसे रख भी नहीं पा रही थी बल्कि एक प्रकार से कैंची उसके हाथ से कह रही थी कि मुझे चलाओ।

यह महसूस होते ही वह तो घबरा गयी — "ओह, यह क्या हो रहा है? यह तो मेजपोश कटा जा रहा है। कैंची, रुक जाओ।"

पर कैंची थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी वह तो बस कपड़ा काटती ही जा रही थी, काटती ही जा रही थी।

वह स्त्री घबराहट में चिल्लायी — "ओ कैंची, रुक जाओ। अरे, मेरी कुरसी की गद्दियॉ परदे चादर सभी कट गये हैं। अरे कालीन भी, तकिये के गिलाफ भी। हे भगवान, अब मैं क्या करूँ।"

पर कैंची थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी और घर में जो कुछ भी था वह सब काटती जा रही थी। इतने में ऊपर से उसका पति आया तो कैंची ने उसका कोट भी काटना शुरू कर दिया।

वह अपनी पत्नी पर चिल्लाया — "यह सब तुम क्या कर रही हो? यह मेरा कोट क्यों काट रही हो? रखो कैंची नीचे।"

स्त्री रोती सी बोली — "मैं नहीं रख सकती। मुझसे यह कैंची रखी ही नहीं जा रही।"

खच खच खच, अब कैंची उसके पति की कमीज काट रही थी, फिर मोजे, फिर जूते। सुबह, दोपहर, शाम कैंची चलती रही और चलती रही और जब तक चलती रही जब तक रात नहीं हो गयी। और घर में जब सब कुछ कट गया तब कहीं जा कर वह कैंची रुकी।

दूर कहीं से उस स्त्री ने आवाज सुनी कोई बूढ़ा आवाज लगा रहा था — "कोई दयालु मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे को खाना दे, मैं सरदी से ठिठुर रहा हूँ।"

3 दो भाई और एक सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा[5]

एक बार यूरोप के एक शहर में दो भाई रहते थे। एक बार उन्होंने गॉव गॉव और शहर शहर जा कर खुशी ढूँढने का विचार किया। और वे खुशी ढूँढने चल दिये।

रास्ते में उन्हें एक बूढ़ा मिला जिसकी दाढ़ी बिल्कुल सफेद थी। वह बूढ़ा उन दोनों को देख कर रुक गया और उनसे पूछा कि वे लोग कहॉ जा रहे हैं। उन्होंने उस बूढ़े को बताया कि वे खुशी की खोज में इधर से उधर घूम रहे हैं।

बूढ़ा बोला — "मैं इस काम में तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ अगर तुम्हें कोई ऐतराज न हो तो।"

दोनों भाइयों को भला इसमें क्या ऐतराज हो सकता था सो उसने अपनी जेब से मुट्ठी भर सोने के सिक्के निकाले और उनसे पूछा — "तुम लोगों में से ये सिक्के किसको चाहिये ये?"

उन दोनों में से बड़ा भाई तुरन्त बोला — "मुझे चाहिये।"

उस बूढ़े आदमी ने फिर अपनी दूसरी जेब में हाथ डाला और सूरज की तरह चमकता हुआ एक बेशकीमती रत्न निकाला और फिर से दोनों से पूछा — "तुम लोगों में से किसको चाहिये यह रत्न?"

---

[5] Two Brothers and a White-Bearded Man - folktale from Europe . Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/European_folktales/European_folktale_1.html

जल्दी से बड़ा भाई फिर बोला — "मुझे चाहिये यह रत्न।" बूढ़े ने वह रत्न भी उस बड़े भाई को दे दिया।

उस बूढ़े के पास एक बड़ा सा थैला था जो उसकी कमर पर लदा था। उसने वह थैला उतार कर नीचे रखा और दोनों से पूछा — "तुममें से कौन यह थैला गॉव तक ले जाने में मेरी सहायता करेगा?"

इस बार बड़ा भाई तो चुप रहा पर छोटे भाई ने अपनी कमीज की बॉहें ऊपर कीं और उसका वह थैला उठाने के लिये झुका तो बूढ़ा हॅसा और बोला — "मेरे बेटे, इस थैले को और इसमें जो कुछ भी है वह भी सब तुम ले जाओ। वह सब तुम्हारा है।"

छोटा भाई बोला — "पर यह थैला तो मेरा नहीं है।"

बूढ़ा बोला — "ले जाओ, ले जाओ। यह थैला मेरी तरफ से तुम्हारे लिये एक भेंट है क्योंकि तुम मेरी सहायता के लिये तैयार हो गये।"

छोटे भाई ने वह थैला खोला तो वह क्या देखता है कि वह थैला तो बेशकीमती रत्नों से पूरा भरा हुआ है।

उसने उस बूढ़े आदमी को धन्यवाद देने के लिये अपना सिर उठाया पर उस बूढ़े आदमी का तो कहीं पता ही नहीं था। वह तो गायब हो गया था।

4 रफू करने वाली सुई[6]

एक समय की बात है कि एक रफू करने वाली सुई थी। वह बहुत चिकनी और बहुत बारीक थी इसलिये वह अपने आपको सबसे बढ़िया किस्म की सुई मानती थी।

जैसे ही उँगलियाँ उसे सिलाई की टोकरी से निकालतीं वह बोलती — "मुझे सँभाल कर रखना क्योंकि अगर मैं गिर गयी तो मैं फिर नहीं मिलूँगी। मैं इतनी बारीक हूँ कि दिखायी भी नहीं दूँगी।"

उँगलियाँ कहतीं — "अच्छा, तुम ऐसा सोचती हो?"

"अच्छा अच्छा, मुझे रास्ता तो दो। मेरे पीछे मेरी पोशाक भी आ रही है।" सुई ने घमंड से कहा और बड़ी शान से अपने पीछे लम्बे धागे को खींचती हुई आगे चल दी।

उँगलियों ने उस सुई को रसोइये के स्लिपर की ओर बढ़ाया क्योंकि वे टूट गये थे। सुई ने मुँह बनाते हुए कहा — "मुझ जैसी कोमल सुई से इतना भारी काम? इस चमड़े तो मैं कभी भी नहीं घुस सकती, मैं तो टूट जाऊँगी।"

और जैसे ही उँगलियों ने उसको उस स्लिपर में घुसाया तो वह तो सचमुच ही टूट गयी।

---

[6] Darning Needle – a folktale from Europe.
[My Note – Darning needle is a very thin and small needle.]

सुई चिल्लायी — "मैंने कहा था न कि मैं बहुत कोमल हूँ मैं टूट जाऊँगी।"

उँगलियों ने सोचा अब तो यह खत्म हो गयी लेकिन रसोइये ने उसके टूटे सिरे पर छोटा सा लाख का टुकड़ा चिपका दिया और उसे अपनी पोशाक में सामने की ओर घुसा लिया।

सुई फिर शान से बोली — "अहा, अब तो मैं ब्रूच[7] बन गयी। मैं जानती हूँ कि मैं हमेशा बड़े कामों के लिये इस्तेमाल की जाती हूँ।" वह रसोइये के सीने पर आराम से बैठी थी।

उसने अपनी पड़ोसन पिन से पूछा — "क्या तुम सोने की बनी हो? बड़ी सुन्दर लग रही हो और क्या तुम्हारा सिर भी अपना है, मगर है छोटा सा, शायद कुछ समय बाद बड़ा हो जाये। मुझे मालूम है कि हर एक के सिर पर लाख का मुकुट नहीं होता।"

और यह कहते कहते वह कुछ और घमंड में भर गयी और फिर उसने अपने आपको तान कर खींच लिया। पर यह क्या? जैसे ही उसने अपने आपको खींचा तो वह तो रसोइये की पोशाक से निकल कर रसोई के सिंक में जा गिरी क्योंकि रसोइया उस समय सिंक साफ कर रहा था।

"शायद मैं सफ़र कर रही हूँ। मुझे अपने ऊपर पूरा भरोसा है कि मैं खोऊँगी नहीं।" पर वह तो पहले ही खो चुकी थी।

[7] Brooch – a decorative piece to adorn the dress. See its picture above.

सिंक में से होती हुई वह गटर में पहुँच गयी। गटर में पहुँचते ही वह बोली — "मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि मैं इस दुनियाँ के लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही कोमल हूँ।"

मगर वह घबरायी नहीं। बहुत सी चीज़ें उसके ऊपर से तैरती चली जा रहीं थीं, डंडियाँ, तिनके, पुराने अखबारों के टुकड़े।

"अरे ये सब चीज़ें कैसी तैरती हुई चली जा रही हैं। क्या ये जानती हैं कि इनके नीचे क्या है? शायद ये नहीं जानती होंगी कि मैं यहाँ बैठी हूँ। उस तिनके को देखो जो बराबर घूमे जा रहा है, घूमे जा रहा है, घूमे जा रहा है।

दोस्त, तुम अपने आप पर इतने खुश न हो, अभी तुम किसी पत्थर से भी टकरा सकते हो, और वह अखबार के टुकड़े, उन पर लिखे शब्द तो लोग कबके भुला चुके होंगे पर अखबार का यह टुकड़ा तो इस तरह फैला हुआ जा रहा है मानो अभी नयी ताजी खबर ले कर आया हो। मैं तो यहाँ शान्ति और धीरज से बैठी अच्छी।"

एक दिन उस सुई ने अपने पास कुछ चमकता हुआ देखा। उसको विश्वास था कि वह हीरा ही होगा लेकिन असल में वह टूटी हुई शीशी का एक काँच का टुकड़ा था लेकिन वह क्योंकि बहुत ज़ोर से चमक रहा था सो सुई अपने आपको उससे बात करने से न रोक सकी।

उसने उसको अपना परिचय बूच कह कर दिया और बोली — "तुम तो कोई हीरे लगते हो।"

"हॉ, हूँ तो मैं कुछ कुछ उसी जाति का।" सो दोनों के दिल में एक दूसरे के लिये इज़्ज़त बढ़ गयी।

उन्होंने आदमियों के बुरे बरतावों पर बात करनी शुरू की। पहले सुई बोली — "एक बार मैं एक भली सी स्त्री की सिलाई की टोकरी में रहती थी। यह स्त्री रसोई बनाती थी। उसके दोनों हाथों में पॉच पॉच उँगलियॉ थीं। वही मेरी देखभाल करती थीं। वे कभी मुझे उठातीं, कभी मुझे फिर टोकरी में रख देतीं।"

कॉच के टुकड़े ने पूछा — "ये तो बताओ कि वे चमकती भी थीं कि नहीं?"

"नहीं, वे चमकती तो नहीं थीं पर वे पॉच बहिनें थीं और उनका पारिवारिक नाम[8] उँगलियॉ था। वे पास पास सीधी खड़ी रहती थीं। लेकिन उन सबकी लम्बाई एक दूसरे की लम्बाई से अलग थी।

उनमें से एक का नाम अँगूठा था। वह छोटी और मोटी थी। उसकी कमर में एक ही जोड़ था और वह केवल कमर से ही मुड़ सकती थी पर फिर भी उसका दावा था कि उसके बिना आदमी बेकार है और बिना उसके वह कभी सिपाही नहीं बन सकता।

[8] Family name or surname

दूसरी उँगली तर्जनी उँगली थी और वह हमेशा ही दूसरों के कामों में टाँग अड़ाती थी और उनकी तरफ इशारा किया करती थी। उसका कहना था कि अगर वह न हो तो कोई लिख ही नहीं सकता था।

बीच की उँगली मध्यमा उँगली थी। वह उन सब उँगलियों में सबसे लम्बी थी और इसका उसे बड़ा घमंड था। चौथी थी अनामिका। उसकी कमर में एक छल्ला पड़ा रहता था। तुम सोच सकते हो कि वह वह उस छल्ले को पहन कर कितनी शानदार लगती होगी।

पाँचवीं जो सबसे छोटी थी, सुबह से शाम तक कोई काम नहीं करती थी पर फिर भी वह चाहती थी कि उसकी हर समय प्रशंसा की जाये।

मैं तो उससे तंग आ गयी थी इसलिये मैंने उन्हें छोड़ने की ठान ली। मैंने अपने आपको एक सिंक में गिरा लिया और यहाँ आ गयी। और यहाँ देखो न हम दोनों ही चमक रहे हैं।"

इसी समय पानी का एक बहाव आया और वह काँच का टुकड़ा सुई की नजरों से ओझल हो गया। "अरे वह तो चला गया, कोई बात नहीं मैं यहाँ शान्ति से बैठूँगी।" कह कर सुई गहरे विचारों में डूब गयी।

"मैं इतनी सुन्दर हूँ कि मुझे तो सूरज की किरन से पैदा होना चाहिये था। मैंने यह अक्सर देखा है कि मैं कहीं भी हूँ सूरज की

किरनें मुझे किसी न किसी तरह ढूँढ ही लेती हैं जबकि मेरी माँ मुझे नहीं खोज सकती।"

एक दिन सड़क से कुछ आदमी गटर में झाँक रहे थे। कभी उन्हें कोई पुरानी कील मिल जाती तो कभी कोई खोया हुआ सिक्का।

एक बोला — "ओह, यह सुई देखो, कितनी गन्दी और पुरानी।"

"मैं गन्दी और पुरानी नहीं सुन्दर और चिकनी हूँ।" सुई ने हालाँकि यह बहुत ज़ोर से कहा था पर किसी ने सुना ही नहीं। उसका लाख का मुकुट कहीं खो गया था और वहाँ अब उसका काला सिरा निकल आया था।

एक लड़का चिल्लाया — "वह देखो, अंडे का एक खोल बहता चला आ रहा है।"

उसने वह सुई ली और उसकी नोक को उस खोल में डाल कर उस खोल को उठा लिया। सुई फुसफुसायी — "ये सफेद दीवारें मेरे काले शरीर को चमकाने के लिये बहुत ठीक हैं। मुझे विश्वास है कि मुझे समुद्री बीमारी नहीं होगी नहीं तो मैं तो टूट ही जाऊँगी।"

मगर न तो उसे कोई समुद्री बीमारी हुई और न वह टूटी। "यही तो फायदा है लोहे के पेट का। अब मैं ठीक हूँ। वही ज़्यादा कोमल है जो ज़्यादा दिन तक ज़िन्दा रह सकता है।

फड़ाक, अंडे का खोल चिल्ला कर टूट गया क्योंकि उसके ऊपर से एक भारी गाड़ी गुजर गयी थी।

"उफ, कितना भारी वजन था इस अंडे के ऊपर। इस वजन से तो मुझे लगता है कि मैं तो बीमार हो जाऊँगी और या फिर टूट जाऊँगी।" लेकिन उतने भारी वजन से भी वह सुई न तो टूटी और न ही वह बीमार पड़ी। वह वहीं लेटी रही।

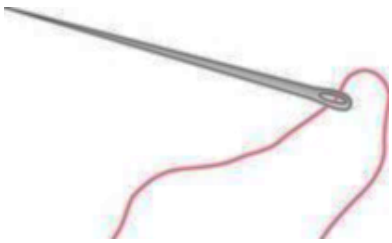

5 गरुड़ों का वायदा[9]

बहुत ज़ोर की ठंड पड़ रही थी। ऐसी सरदी में कोई भी जीव पहाड़ों पर नहीं रह सकता था। सभी चट्टानों और पेड़ों पर घने कोहरे की परत जमी पड़ी थी। इसलिये पहाड़ों पर रहने वाले सभी जानवर, जंगली बिल्ला, भालू आदि पहाड़ों से नीचे आ गये थे।

इन्हीं जानवरों में एक मादा गरुड़[10] भी थी जो घाटी में खरगोशों के पास मदद माँगने आ पहुँची। उसने खरगोशों के घर के पास खड़े हो कर पूछा — "प्यारे खरगोश भाइयों, बाहर बहुत सरदी है, क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ?"

सबसे बूढ़े खरगोश ने अपना सिर बाहर निकाला तो सामने एक अजनबी को खड़ा देखा। उसने गरुड़ को पहले कभी नहीं देखा था। वह बोला — "ओ अजनबी, हम तुमको इस ठंड से छुटकारा तो दिला सकते हैं अगर तुम यह वायदा करो कि तुम हमें कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे।"

मादा गरुड़ ने कसम खायी कि वह हमेशा उनके प्रति वफादार रहेगी और उनको कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगी। सो खरगोश

[9] Promise of Eagles – a folktale of Europe

[10] Translated for the word "Eagle" – see its picture above.

ने उसको अन्दर बुला लिया और उस गरुड़ ने सारी सरदियॉ आराम से खरगोश के घर में गुजारीं।

उसी समय एक नर गरुड़ भी पहाड़ों से उतर कर नीचे आया और उसने मुर्गियों के घर के दरवाजे पर खड़े हो कर कहा — "प्यारी मुर्गियों, बाहर बहुत सरदी है, क्या मैं सरदी से बचने के लिये अन्दर आ सकता हूँ?"

सबसे बड़े मुर्गे ने अपना सिर बाहर निकाला और एक अजनबी को खड़ा देखा और क्योंकि उसने भी गरुड़ को पहले कभी नहीं देखा था बोला — "ओ अजनबी, हम तुमको इस ठंड से छुटकारा तो दिला सकते हैं अगर तुम यह वायदा करो कि तुम हमें कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे।"

नर गरुड़ ने भी इस बात की कसम खायी कि वह हमेशा उनके प्रति वफादार रहेगा और वह उनको कभी भी कोई भी नुकसान नहीं पहुँचायेगा। सो उस मुर्गे ने उसको अन्दर बुला लिया और उस नर गरुड़ ने भी सारी सरदियॉ आराम से उन मुर्गों के घर में गुजारीं।

कुछ समय बाद सरदियॉ खत्म हो गयीं और वसन्त आ गया और सूरज फिर सोने की तरह चमकने लगा तो नर गरुड़ उड़ गया। सभी मुर्गे मुर्गियॉ उसके पंखों की फड़फड़ाहट से डर गये।

मगर नर गरुड़ ने ऊपर से ही कहा — "प्यारी मुर्गियों, मैं तुम्हारे इस उपकार को कभी नहीं भूलूँगा और अपने वायदे के अनुसार

हमेशा ही तुम्हारा दोस्त रहूँगा।" और तब से सच में ही वह उनका दोस्त रहा। इस बीच में उसने केवल खरगोशों का शिकार किया।

उसी समय जब वसन्त आया और सूरज फिर सोने की तरह चमकने लगा तो मादा गरुड़ भी उड़ गयी। सारे खरगोश उसके पंखों की फड़फड़ाहट से डर गये मगर मादा गरुड़ ने भी ऊपर से ही कहा — "प्यारे खरगोश भाइयो, मैं तुम्हारे इस उपकार को कभी नहीं भूलूँगी और अपने वायदे के अनुसार हमेशा ही तुम्हारी दोस्त बनी रहूँगी।"

और तब से सच में ही वह उनकी दोस्त बनी रही। इस बीच में उसने केवल मुर्गियों का ही शिकार किया।

अब मादा गरुड़ बहुत सुन्दर हो गयी थी। पहाड़ के सारे नर गरुड़ उससे शादी करने को इच्छुक थे। वे उसके लिये स्वादिष्ट मुर्गियों का मॉस लाते थे परन्तु वह तो मुर्गियॉ खा खा कर ऊब चुकी थी इसलिये उसने भूख हड़ताल कर दी और पहाड़ की और ज़्यादा ऊँची चोटियों पर चली गयी।

और जब इस कहानी के नायक नर गरुड़ को उस मादा गरुड़ के बारे में पता चला तो वह उसको खुश करने के लिये खरगोश ले आया।

आश्चर्य, उसकी खोयी हुई भूख वापस आ गयी। उसने तुरन्त ही उससे खरगोश ले लिया और दोनों ने मिल कर अपना घर बसाया

और करीब करीब एक सप्ताह तक वह नर गरुड़ अपनी पत्नी को स्वादिष्ट खरगोश खिलाता रहा।

हफ्ते भर तक मादा गरुड़ ने देखा कि उसका पति बेमन से खाना खाता था तो एक दिन उसने अपने पति से पूछा — 'प्रिये, क्या बात है, क्या तुम्हें ठंड लग रही है? ऐसा करते हैं कि आज खाना लाने मैं जाती हूँ और तुम घर में आराम करो।"

ऐसा कह कर मादा गरुड़ तुरन्त ही घाटी से एक मुर्गी मार कर ले आयी जिसे उसने और उसके पति दोनों ने बड़े प्रेम से खाया क्योंकि वह खुद भी कई दिनों से खरगोश खा खा कर ऊब चुकी थी।

अब क्या था घर में कभी खरगोश आता तो कभी मुर्गी। दोनों ने इस तरह का खाना पहले कभी नहीं खाया था। वे लोग खाने का पूरा आनन्द ले रहे थे।

इस तरह न तो मुर्गियाँ ही शिकायत कर सकीं कि नर गरुड़ ने अपना वायदा नहीं निभाया और न खरगोश ही कुछ कह सके कि मादा गरुड़ ने अपना वायदा नहीं निभाया। दोनों गरुड़ों ने अपने अपने वायदे को निभाया।

6 राजकुमारी और मटर का दाना[11]

बहुत पुरानी बात है कि यूरोप के एक देश का राजकुमार एक असली राजकुमारी से शादी करना चाहता था सो वह उसकी खोज में दुनियॉ भर में घूमता रहा।

अब दुनियॉ में राजकुमारियों की क्या कमी पर यह कहना बहुत मुश्किल था कि उनमें से असली राजकुमारी कौन सी है।

हर बार राजकुमार को यही लगता कि उसे असली राजकुमारी मिल गयी है परन्तु हर बार वह गलती पर होता। जब वह असली राजकुमारी न पा सका तो वह घर लौट गया।

कुछ समय बीत गया तो एक रात बहुत ज़ोर का तूफान आया, बादल गरजे, बिजली चमकी और मूसलाधार बारिश होने लगी। यकायक शहर के दरवाजे पर खटखट हुई तो राजा खुद ही दरवाजा खोलने नीचे गया।

दरवाजे के बाहर एक राजकुमारी खड़ी थी मगर उसकी हालत बहुत खराब थी। उसके कपड़े भीग गये थे, बालों से पानी टपक रहा था, जूतों से भी पानी टपक टपक कर बाहर आ रहा था।

[11] The Princess and the Pea

हालॉकि देखने में तो ऐसा नहीं लगता था कि वह कोई राजकुमारी है परन्तु फिर भी वह यही कहे जा रही थी कि वह एक राजकुमारी है।

राजा उसको ऊपर ले आया तो रानी ने कहा कि यह हम खुद पता लगा लेंगे कि वह सच बोल रही है या झूठ।

रानी ने किसी से कुछ नहीं कहा और उस राजकुमारी को सीधी मेहमानों के कमरे में ले गयी और वहॉ बिस्तर के सारे गद्दे हटा कर उनके नीचे मटर का एक छोटा सा दाना रख दिया।

फिर उसने उसके ऊपर बीस गद्दे लगा दिये और उन बीस गद्दों के ऊपर बीस मोटी मुलायम चादरें बिछा दीं। ऐसा करके वह राजकुमारी को बुला लायी और उसको उस बिस्तर पर सुला दिया।

सुबह रानी ने राजकुमारी से पूछा — "बेटी, क्या तुमको रात को नींद ठीक से आयी? क्या तुम आराम से सो पायीं?"

राजकुमारी ज़ोर से बोली — "सोयी? मुझे तो झपकी भी नहीं लगी। मैं रात भर अपनी ऑखें ही बन्द नहीं कर सकी। भगवान जाने मेरे बिस्तर में क्या था कि मुझे सारी रात यही लगता रहा कि मैं पत्थरों पर सोयी हुई हूॅ। मैं सिर से पैर तक नीली पड़ गयी हूॅ। मेरी रात तो बहुत ही बुरी कटी।"

रानी के लिये उसके राजकुमारी होने का यह सबूत काफी था। अब वे सब जान गये कि यह असली राजकुमारी है नहीं तो वह बीस

गद्दों और बीस मोटी चादरों के नीचे मटर का दाना कैसे पहचान पाती।

अब राजकुमार को असली राजकुमारी मिल गयी थी सो उसकी शादी उस राजकुमारी से कर दी गयी और वे दोनों सुख से रहने लगे।

मटर का वह दाना एक शीशे के बक्से में बन्द कर राज घराने के अजायबघर में रख दिया गया। वह अभी भी शायद वहीं होगा अगर उसे किसी ने उसे चुरा न लिया हो तो।

7 राजकुमार और सेब[12]

बहुत पुरानी बात है कि यूरोप का एक राजकुमार किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता था जिसके सेब जैसे लाल लाल गाल हों। सेब के बीज जैसी कत्थई ऑखें हों और सेब के रस जैसा मीठा स्वभाव हो।

लेकिन ऐसी लड़की उसको अपने राज्य में कोई मिली ही नहीं इसलिये वह ऐसी ही एक लड़की की खोज में दूसरे देश को चल दिया।

वह घोड़े पर सवार था। तीन दिन और तीन रात की लगातार सवारी के बाद वह एक ऐसी जगह पहुॅचा जहॉ छोटी छोटी झाड़ियों की एक कतार लगी थी।

उस कतार में एक झाड़ी के नीचे एक बालों वाली टॉग बाहर निकली हुई थी। वह वहॉ रुक गया। तभी उसने एक आवाज सुनी — "उफ मेरी बदकिस्मती, मैं यहॉ चिपक गया हूॅ।"

राजकुमार ने पूछा — "तुम कौन हो?"

वही आवाज फिर बोली — "मेरी टॉग खींचो तभी तुमको पता चलेगा कि मैं "मैं" हूॅ।"

[12] A Prince and the Apple – a folktale from Western Europe

"अच्छा" कह कर राजकुमार ने ज़ोर लगा कर उसकी वह टॉग खींची तो एक छोटा आदमी जिसका शरीर गोल था और वह लाल और हरे रंग के कपड़े पहने था बाहर निकल आया। उसने राजकुमार को अपने को बाहर निकालने के लिये धन्यवाद दिया।

राजकुमार ने पूछा — "मुझे तुम्हारी सहायता करके बड़ी खुशी हुई पर तुम इन झाड़ियों में क्यों पड़े थे, यह तो बताओ।"

वह आदमी बोला — "एक राक्षस ने मेरी बेटी को चुरा लिया है। जैसे ही उसने मेरी बेटी को यहॉ आ कर पकड़ा, तो मैं यहॉ आ कर छिप गया।"

राजकुमार ने पूछा — "तो क्या वह तुम्हारी बेटी को यहॉ से उठा कर ले गया है?"

"हॉ, उसने उसको अपनी एक उॅगली और अॅगूठे के बीच में दबाया और ले उड़ा। मैं तो बिल्कुल गूॅगा सा हो गया और खॉस भी न सका।"

"यह तो बड़ा बुरा हुआ। वह उसे किस तरफ ले गया है?"

"वह उसे भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार ले गया है।"

ऐसा उस छोटे आदमी ने राजकुमार को बताया।

राजकुमार ने दोहराया — "भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार। मैं तुरन्त ही जाता हूँ और तुम्हारी बेटी को ले कर आता हूँ। मगर वह देखने में है कैसी?"

उस आदमी ने जवाब दिया — "गाल उसके सेब जैसे लाल हैं, आँखें उसकी सेब के बीज जैसी कत्थई हैं और स्वभाव उसका सेब के रस जैसा मीठा है। अगर तुम....।"

यह सुनते ही राजकुमार को इन्तजार कहाँ? इसी लड़की की तो तलाश थी उसको। सो वह तो यह जा और वह जा। वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हो गया और दौड़ चला।

वह हवा की गति से भागा जा रहा था कि एक कुत्ते का घर आया। कुत्ता अपने घर से निकल कर भौंकने लगा — "राजकुमार, राजकुमार, तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहाँ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की आँख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

कुत्ता बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ। पहले मुझे हड्डी दो तभी मैं तुमको जाने दूँगा।"

राजकुमार बोला — "तुम भूखे हो तो मेरे पास हड्डी तो नहीं है पर मेरा खाना तुम ले सकते हो। यह लो कुछ रोटियाँ और इन्हें खा

कर अपनी भूख मिटाओ।" कह कर राजकुमार ने उसे अपनी सारी रोटियॉ दे दीं।

कुत्ते ने खुशी से वह रोटियॉ खाईं और राजकुमार से बोला — "जाओ राजकुमार, भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो मगर याद रखना अगर तुम्हें वह लड़की कहीं दिखायी न दे तो वहॉ एक सेब रखा होगा वह सेब उठा लेना।"

राजकुमार फिर अपने घोड़े पर चढ़ा और कुत्ते के ऊपर से छलॉग लगा दी। हवा की गति से अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ वह जादूगरनी के घर के पास आया।

जादूगरनी ने पूछा — "राजकुमार, तुम कहॉ जा रहे हो?"

राजकुमार ने जवाब दिया — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूॅ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

जादूगरनी ने कहा — "मुझे सोने के लिये एक कम्बल चाहिये। जब तुम मुझे एक कम्बल दोगे तभी मैं तुम्हें जाने दूॅगी।"

राजकुमार बोला — "तुम थकी हुई हो। मेरे पास कम्बल तो नहीं है पर मेरे पास यह मखमली कोट है यह तुम ले सकती हो, यह

लो।" यह कह कर राजकुमार ने उसे अपना लम्बा मखमली कोट उसे दे दिया।

जादूगरनी ने वह लम्बा कोट अपने शरीर के चारों तरफ लपेट लिया और बोली — "अब तुम जा सकते हो राजकुमार। भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो। पर हॉ याद रखना अगर तुम्हें वह लड़की न मिले तो वहॉ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार जादूगरनी के मकान के ऊपर से छलॉग लगाता हवा की सी तेज़ी के साथ फिर उस लड़की की खोज में चल दिया। और अब आया वह खाई के पार एक बड़े दरवाजे के पास।

"चीं चीं, राजकुमार तुम कहॉ जा रहे हो?" दरवाजे ने पूछा।

"मैं? मैं राक्षस के किले को जा रहा हूॅ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।" राजकुमार ने कहा।

"चीं चीं, पहले मेरे जोड़ों[13] में तेल लगाओ तभी मैं तुम्हें यहॉ से जाने दूॅगा।" दरवाजे ने कहा।

राजकुमार बोला — "ओह, तुम्हारे जोड़ों में तो बहुत जंग लगी है। मेरे पास कोई तेल तो नहीं है, हॉ थोड़ा साबुन

[13] Translated for the word "Hinges" – see its picture above.

है, वही ले लो।" कह कर उसने दरवाजे के जोड़ों में थोड़ा सा साबुन लगा दिया।

दरवाजा खुश हो कर बोला — "जाओ राजकुमार जाओ। भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो पर एक बात याद रखना अगर तुम्हें वहाँ वह लड़की दिखायी न दे तो वहाँ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार ने दरवाजे के ऊपर से छलाँग लगायी और फिर घोड़ा नचाता चला गया। आखिर वह राक्षस के किले पर पहुँचा। वह सीधा घोड़े को सीढ़ियाँ चढ़ाता सामने वाले दरवाजे पर पहुँचा।

वह किले के पीछे पहुँचा पर उसे न तो वहाँ कोई राक्षस दिखायी दिया और न ही वह लड़की। वह आगे वाले कमरे में गया पर वहाँ भी उसको कोई दिखायी नहीं दिया।

वह रसोई में गया वहाँ भी उसे न राक्षस दिखायी दिया न वह लड़की। अब वह उस राक्षस के सोने के कमरे में पहुँचा।

वहाँ उसने खर्राटों की आवाज सुनी। उसने अन्दर झाँक कर देखा तो राक्षस गहरी नींद सो रहा था और पास ही एक तश्तरी में एक सेब रखा हुआ था।

तभी राजकुमार को याद आया कि सभी ने उससे क्या कहा था। "हाँ, हाँ अगर तुम्हें वह लड़की वहाँ दिखायी न दे तो वहाँ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

सो उसने हाथ बढ़ा कर वह सेब उठा लेना चाहा पर उसके छूने से पहले ही वह सेब एक लड़की में बदल गया जिसके गाल सेब की तरह सुर्ख थे और ऑखें सेब के बीजों की तरह कत्थई रंग की थीं।

लड़की ने रो कर कहा — "राजकुमार, मुझे बचा लो।"

राजकुमार बोला — "आओ चलें, मेरा घोड़ा नीचे खड़ा है।" और वे दोनों वहॉ से भाग लिये। राजकुमार ने लड़की को घोड़े पर बिठाया और दौड़ चला।

तभी राक्षस की ऑख खुल गयी। वह वहीं से चिल्लाया — "दरवाजे, दरवाजे, रोको उसे।"

दरवाजा बोला — "मैं नहीं रोकूँगा उसको, उसने मेरे जोड़ों में साबुन लगाया है। राजकुमार, तुम जाओ।" और राजकुमार उस लड़की को ले कर दरवाजे के ऊपर से निकल गया।

अब राक्षस उनके पीछे भागा और चिल्लाया — "जादूगरनी जादूगरनी, उसे रोको, देखो वह जाने न पाये।"

जादूगरनी बोली — "मैं नहीं रोकूँगी उसे, उसने मुझे सोने के लिये मखमली कोट दिया है। राजकुमार, तुम जाओ। भाग जाओ यहॉ से।"

और राजकुमार अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ वहॉ से चला गया।

राक्षस अपनी पूरी गति से भाग रहा था। वह फिर चिल्ला कर बोला — "ओ कुत्ते, रोक ले उसको, जाने नहीं देना।"

कुत्ता बोला — "मैं नहीं रोकूँगा उसको। उसने मुझे खाना दिया है। जाओ राजकुमार जाओ।" और राजकुमार आगे बढ़ गया।

जब राक्षस पीछे से आया तो कुत्ते ने उसके पैर में काट लिया और फिर पकड़ लिया।

राजकुमार भागता ही गया और भागता ही गया जब तक कि वह झाड़ियों की कतार नहीं आ गयी जहाँ उस लड़की का पिता छिपा हुआ था।

घोड़े की टाप की आवाज सुन कर वह आदमी फिर से वहीं छिप गया था। राजकुमार ने फिर उसकी टाँग पकड़ कर उसको बाहर निकाला। असल में वह आदमी घोड़े की टाप की आवाज सुन कर डर गया था और फिर से झाड़ियों में छिप गया था।

उसे अपनी बेटी पा कर बड़ी खुशी हुई और राजकुमार के कहने पर उसने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर दी।

राजकुमार को अपनी मन पसन्द पत्नी मिल गयी थी। वह उसको ले कर खुशी खुशी घर वापस आ गया और उससे शादी कर के आराम से रहने लगा।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–**4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–**5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–**6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
13 इटली की लोक कथाऐं–**9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
14 इटली की लोक कथाऐं–**10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
15 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
16 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**